आचार्यकुल चंडीगढ़ (रजि.)

संक्षिप्त कार्य विवरण– वर्ष 2013–14

(दिनांक 01–04–2013 से 31–03–2014 तक)

आचार्यकुल चंडीगढ़ पूज्य सन्त विनोबा भावे, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों पर निर्भय, निर्वैर तथा निष्पक्ष भावना को ध्यान में रख कर 1997 से चंडीगढ़ में सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

1 :– प्रार्थना सभा :– दिनांक 21–04–2013 को आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई जिसमें आचार्यकुल के सदस्यों एवं अन्य लोगों ने भाग लिया। सभा में पांच वर्षीय बच्ची देवी के साथ जो जघन्य अपराध हुआ उस पर दुख प्रकट किया गया तथा उसके शीघ्र स्वस्थ होने की ईश्वर से प्रार्थना की गई। दिल्ली में लड़कियों के साथ पुलिस ने जो दुर्व्यवहार किया उसकी निंदा की गई और सरकार से अनुरोध किया गया कि जिसने भी यह दुष्कर्म किया है उसको जल्द से जल्द सजा दी जाये।

2 :– स्वतंत्रता सेनानी मानीश कुमार शारदा की पुण्यतिथि :– दिनांक 05–05–2013 को प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी विचारक स्वर्गीय श्री मानीश कुमार शारदा जी की चौथी पुण्यतिथि आचार्यकुल, सक्सेसर ऑफ फ्रीडम फाईटर एसोसिएशन एवं खादी सेवा संघ तथा गांधी स्मारक निधि के सहयोग से गवर्नमैंट म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी ऑडिटोरियम, सैक्टर 10, चंडीगढ़ में श्रद्धापूर्वक मनाई गई।

आचार्यकुल के सचिव, देवराज त्यागी ने बताया कि सन 1914 को लाहौर में जन्में श्री शारदा जी ने एम.ए. इकॉनोमिक्स करने के बाद 1937–38 में पंजाब नैशनल बैंक ज्वाइन किया। सन 1938 में सेवा ग्राम में गांधी जी से मिलने के बाद शारदा जी अपनी बैंक की नौकरी छोड़ने के बाद पूरी तरह से गांधीवादी विचारधारा और खादी से जुड़ गये। एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में देश की सेवा करते हुए श्री मानीश कुमार शारदा जी ने 44 माह से अधिक समय जेल में बिताया। आजादी के पश्चात वे खादी से जुड़े रहे और सन 1977–78 तक पंजाब खादी बोर्ड में कईं उच्च पदों पर रहे।

कार्यक्रम में रॉक गार्डन के रचियता पद्मश्री नेक चंद मुख्य अतिथि और देसराज गौतम, अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग आयोग विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान 31 स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों तथा 5 भूतपूर्व सैनिकों ब्रिगेडियर केशव चंद (रिटायर्ड), ब्रिगेडियर एस.सी. पाठक (रिटायर्ड), कर्नल आर. कुमार (रिटायर्ड), ले. कर्नल श्रीमती शशीकान्ता (रिटायर्ड), मेजर डी.एस.संधू (रिटायर्ड) तथा चंडीगढ़ के जाने–माने एवं उभरते हुऐ 15 साहित्यकारों जिनमें श्री बी.डी. कालिया, हमदम, कैलाश अह्लूवालिया, प्रेम विज, श्री बलबीर के. बाहरी तंहा, डा. एम.एम. जुनेजा, श्री सुल्तान अंजुम, श्री जी.एस. बोपाराय, श्री चमन लाल 'चमन' श्री वी.पी. मेहता, श्री कुमार शर्मा अनिल, श्रीमती हेमा शर्मा, डा. सुभाष भास्कर, श्री सुशील गुप्ता, श्रीमती पुनीता बावा आदि को सम्मानित किया गया। समारोह में ब्लू बर्ड स्कूल पंचकूला के बच्चों ने स्वागत गीत गाकर मंत्र मुग्ध कर दिया। पं. मोहन लाल पब्लिक स्कूल, सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र के बच्चों ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

मंच संचालन पुनीता बावा ने किया तथा श्री के. के. शारदा ने सभी लोगों का हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम में 300 लोगों ने भाग लिया।

3 :– <u>विनोबा भावे जयंती</u> :– दिनांक 11–09–2013 को आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16 चंडीगढ़ में संत विनोबा भावे की 119वीं जयन्ती बड़े श्रृद्धापूर्वक श्रीमती प्रज्ञा शारदा, सदस्य आचार्यकुल की अध्यक्षता में मनाई गई। कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्वधर्म प्रार्थना से हुआ।

श्रीमती प्रज्ञा शारदा ने सभा की अध्यक्षता करते हुऐ बताया कि विनोबा भावे जी गांधी जी के परम अनुयायी थे तथा जीवन भर उनके सत्य अहिंसा के रास्ते पर चलते रहें। विनोबा जी ने साढ़े तेरह वर्ष तक 3650 मील की पद यात्रा की तथा 44 लाख एकड़ जमीन भूदान में प्राप्त की। उन्होंने जीवन भर दिलों को जोड़ने का काम किया। उन्होंने आगे बताया कि 1940 में गांधी जी ने उन्हें 'प्रथम सत्याग्रही' के लिये चुना था तथा 1932 में स्वतंत्रता संग्राम में जेल काटते समय उन्होंने धुलिया जेल में गीता पर प्रवचन किये। आज गीता प्रवचन विभिन्न भाषाओं में छपकर लगभग तीस लाख प्रतियां बिक्री हो चुकी है।

श्री कांशी राम मेम्बर आचार्यकुल ने संत विनोबा जी के बारे में बताते हुऐ कहा कि उन्होंने अपने जीवन में छह आश्रमों की स्थापना देश के विभिन्न कोनों में की ताकि निर्भय, निर्वैर तथा निष्पक्ष आचार्यशक्ति का विकास हो सके।

डा. एम. पी. डोगरा, प्राकृतिक चिकित्सक, गांधी स्मारक भवन ने कहा कि विनोबा भावे कहते थे कि अगर विज्ञान एवं आत्मज्ञान का जोड़ मिल जाये तो यह दोनों इस पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं। विज्ञान के बाहरी प्रकाश की पूर्ति अध्यात्म के भीतरी प्रकाश को करनी चाहिये। हमें आज के छोटे मानव को बदल कर नये 'विश्व मानव' का निर्माण करना है।

जे. डी. चीमा, डा. पूजा, भारती देसाई, उषा शर्मा, पापिया चक्रवर्ती, रीना परवीन, विक्की, पूनम, विवेक कपूर, सिलाई की छात्राओं आदि ने कार्यक्रम में भाग लिया।

4 :– <u>राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयन्ती</u> :– गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16 चंडीगढ़ में आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से गांधी जयन्ती बड़े श्रृद्धापूर्वक श्री के. के. शारदा की अध्यक्षता मे मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार बंसल, पूर्व रेल मंत्री एवं सांसद सदस्य थे। उन्होंने अपने अभिभाषण में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को महान सन्त एवं राजनेता बताया। गांधी जी ने सत्य को राजनीति में महत्व दिया। उन्होंने देश में सत्य एवं अहिंसा को सम्मान दिलाया। उन्होंने कहा कि हमें उनके आदर्शो पर चल कर देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी उठाने का संकल्प लेना चाहिये।

श्री के. के. शारदा (अध्यक्ष) सक्सेसर ऑफ फ्रीडम फाइटर एशोसिऐसन ने मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार बंसल एवं सभी उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को पूरे विश्व ने मान्यता दी है इसलिये गांधी जयन्ती को यू. एन.ओ. ने विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया है। जिन अंग्रेजों से गांधी ने भारत को आजाद कराया आज वे लोग गांधी को ज्यादा मानते हैं तथा उनके विचारों पर रिसर्च हो रही है।

देवराज त्यागी, निदेशक गांधी स्मारक भवन ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए राष्ट्रपिता को एक महान सन्त व नेता बताया जिसने सत्याग्रह, निष्क्रिय प्रतिरोध, अनशन तथा आत्मपीड़न के अस्त्रों से अंग्रेजों का मुकाबला किया तथा देश को आजादी दिलाई।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती नीलम शर्मा एवं श्री अनिल के मार्गदर्शन में गांधी जी के प्रिय भजन '' वैष्णनव जन तो तेने कहिये'' से हुआ। उसके बाद बच्चों ने स्वागत गीत, रामधुन एवं अन्य मधुर भजनों का गायन कर के किया। कार्यक्रम में सामूहिक चर्खा कताई का आयोजन भी किया गया जिसमें देवसमाज कॉलेज सैक्टर 36 की छात्राओं ने भी भाग लिया।

5 :– <u>उर्दू पुस्तक 'आबशार–ए–अदब' का विमोचन</u> :– डा. बी. डी. कालिया 'हमदम' की लिखी उर्दू पुस्तक आबशार–ए–अदब का लोकार्पण एवं चर्चा गोष्ठी का आयोजन दिनांक 6–10–2013 को किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर लैफ्‌टीनैन्ट जनरल बी. के. एन. छिब्बर, पूर्व राज्यपाल एवं प्रशासक चंडीगढ़, विशिष्ट अतिथि के तौर पर तथा जस्टिस

प्रीतम पाल लोकायुक्त हरियाणा तथा श्री समीर माथुर IAS गृह सचिव हरियाणा ने अध्यक्ष के तौर पर भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुऐ समीर माथुर IAS गृह सचिव हरियाणा ने कहा कि बी.डी. कालिया की भीतरी और बाहरी यात्राओं का उनकी काव्यात्मक गहराईयों की साथ–साथ अभिव्यक्ति आज इस अविस्मरणीय ग्रन्थ के रूप में हमारे मध्य एक खजाने के रूप में आई है। दुनिया भर में दिये साहित्यिक जवाहरात इस सफरनामे में चमक रहे हैं। यह पुस्तक उर्दू साहित्य और सफरनामों की उत्कृष्ठ फेहरिस्त में शमिल एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुख्य अतिथि ले. बी. के. एन. छिब्बर ने कहा कि आबशार–ए–अदब पर चर्चा सुनकर मुझे लगा कि यह प्रयास, यह रचना अश्वमेघ यज्ञ से कम नहीं। यह एक अनमोल अनुपम कृति है जो चिर काल तक मार्गदर्शन करती रहेगी। यह एक ऐतिहासिक अदबी दास्तावेज है।
समारोह में जनाब जय गोपाल अश्क अमृतसरी, जनाब गुलाम नबी खयाल श्रीनगर , शम्स तबरेज़ी हरियाणा उर्दु अकादमी पंचकूला, जगदीश चंद्र जोशी जालन्धर, सोहनराही लंदन, जस्टिस प्रीतम पाल, के. के. शारदा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री देवराज त्यागी ने सभी का आभार प्रकट किया।

6 :– ''नील जल की सोन मछली'' नामक पुस्तक का विमोचन'' :– गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़ में आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से 16 नवंबर 2013 को श्रीमती पुनीता बावा की तीसरी पुस्तक ''नील जल की सोन मछलियां'' का विमोचन श्री शिव साईं समिति के सौजन्य से हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में संसद सदस्य एवं पूर्व रेल मंत्री, माननीय श्री पवन कुमार बंसल ने इस पुस्तक का विमोचन किया।

इस अवसर पर कवयित्री पुनीता बावा की पुस्तक के बारे में मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार बंसल ने कहा कि पुनीता बावा ने बहुत थोड़े समय में अपनी साहित्यिक यात्रा के कईं सोपान पार लिए हैं। भविष्य में शीघ्र ही उनके कुछ और ठोस व समाज हितकारी नए प्रयास आपके सामने आएँगे, ऐसी मैं आशा करता हूँ। श्री रमेश कुंतल मेघ ने कहा कि पुनीता की कविताओं में नारी मन में उठने वाले प्रत्येक भाव को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया गया है। वह नारी को द्रोह करने को नहीं उकसाती, लेकिन नारी हृदय की पीड़ा को प्रस्तुत करने को अपनी कलम में भरपूर स्याही रखती है। हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक श्री श्याम सखा श्याम ने कहा कि पुनीता बावा के इस काव्य संग्रह में 70 कविताएँ संग्रहित हैं। खुली कविता विधा के आधार पर अपनी कविताओं को बहुत सुंदर और सरल शब्दों में पिरोया है। पुनीता बावा ने सरल भाषा का प्रयोग किया है। आम व्यक्ति की भी समझ के दायरे में होने से कविताओं के भाव बहुत सटीक एवम् स्पष्ट परिलक्षित होते प्रतीत होते हैं। श्री प्रेमविज, श्री विजय कपूर, श्री चंद्र भार्गव, श्री बलवीर तन्हा ने अपने विचार भी प्रस्तुत किए एवम् कवयित्री के इस प्रयास की सराहना की। इस अवसर पर कवयित्री पुनीता बावा ने भी अपनी कुछ कविताओं का वाचन किया।

कईं प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बी.डी. कालिया 'हमदम', श्री प्रेमविज, श्री कैलाश आहलूवालिया, श्री बलवीर 'तन्हा' शशीप्रभा, परमजीत परम, अमरजीत अमर, विजय कपूर, चमन लाल चमन, कुमार शर्मा अनिल, सुशील गुप्ता, बी. के. गुप्ता, श्री चंद्र भार्गव, तरूणातरू, नवीन नीर इत्यादि ने इस समारोह में भाग लिया। चंडीगढ़ प्रशासन एवं शिक्षा विभाग से भी कईं जानी मानी हस्तियॉ मौजूद थीं।

आचार्यकुल चंडीगढ़ के अध्यक्ष श्री के. के. शारदा ने कहा कि ये पुनीता की तीसरी पुस्तक है और इसके अतिरिक्त कईं प्रकाशनों में उनके लेख गीत और कविताएँ भी प्रकाशित होते रहते हैं। साहित्य के क्षेत्र में चंडीगढ़ में तो पुनीता बावा ने अपनी एक पहचान तो बनाई ही है साथ ही देश भर के 180 साहित्यिक ग्रुप्स के साथ भी जुड़ी हैं। श्री शिव साईं समिति के अध्यक्ष श्री आर. के. गर्ग ने भी पुनीता बावा की प्रशंसा करते हुए उनके पुस्तक के लिये उन्हें बधाई दी।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार श्री रमेश कुंतल मेघ, हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक श्री श्याम सखा श्याम भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में गांधी स्मारक भवन के निदेशक श्री देवराज त्यागी ने सभी उपस्थित मेहमानों का धन्यवाद किया।

7 :– <u>आचार्यकुल संगीति</u> :– केन्द्रीय आचार्यकुल पवनार (वर्धा) एवं केन्द्रीय गांधी शान्ति प्रतिष्ठान नई दिल्ली ने विषय ''नक्सलवादी – माओ वादी हिंसा–प्रतिहिंसा : समाधान'' पर 12 – 13 दिसम्बर 2013 को नई दिल्ली में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के सभागार में आचार्यकुल संगीति का संयुक्त अभिक्रम हुआ। इसमें चंडीगढ़ की ओर से श्री देवराज त्यागी ने भाग लिया।

इस समारोह में देश के उच्च कोटि के विद्वान विचारक, गांधीवादी चिन्तकों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख प्रो. यशपाल, प्रो. रामजी सिंह, पदमभूषण कुलदीप नैयर, प्रो. रघुनन्दन शर्मा, श्री अंजुम, श्री ईश्वर दयाल, श्री अशोक कुमार शरण, सुरेन्द्र कुमार आदि ने भाग लिया।

भारत में संगठित सशस्त्र संघर्ष मुख्य रुप से दो प्रकार के है। एक तो पूर्वोत्तर प्रान्त के नागालैण्ड, मिजोरम और कुछ हद तक पंजाब और असम में उभरते रहे हैं। लेकिन एक विशेष सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि के साथ हिंसा के द्वारा सत्ता के अधिग्रहण को लक्ष्य करके जो आंदोलन चल रहे हैं, वह साम्यवाद के अर्न्तगत नक्सलवाद, माओवाद के रूपों में कई चरणों में, कई क्षेत्रों में उभरे है।

सम्पूर्ण जनता को विश्वास में लेकर सुरक्षा शांति और न्याय के उद्देश्यों को सामने रख तत्कालीन और दीर्घकालीन नीति का निर्माण होना चाहिए। इसके अभाव में प्रशासन तंत्र से जो कुछ हो रहा है वह अपर्याप्त तो है ही उसमें जन भावनाओं और जन–सहयोग का संस्पर्श भी नहीं है। जिस प्रकार बाह्य आक्रमण के विरूद्ध युद्ध में सम्पूर्ण राष्ट्र को विश्वास में लेकर व्यूह रचना की जाती है, उस तरह इस समस्या की गम्भीरता समझकर व्यापक समझ से व्यूह रचना की आवश्यकता है। भले ही नक्सलवाद माओवाद शासन सत्ता प्राप्त करने को लक्षित संघर्ष हो, पर हमें इसके सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक पक्षों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। स्पष्ट है कि जहॉ गन्दगी होगी वही मच्छर – मक्खियां पैदा होंगी। गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, अशिक्षा, दारूण विषमता और घनघोर भ्रष्टाचार में ही नक्सल–माओवाद के बीजांकुर है।

8 :– <u>डा. गोपीचंद भार्गव पुण्यतिथि</u> :– आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से दिनांक 26–12–2013 को गांधी स्मारक भवन में प्रसिद्ध गांधीवादी नेता, स्वतंत्रता सेनानी एव प्रथम मुख्य मंत्री संयुक्त पंजाब, डा. गोपीचन्द भार्गव की 47वीं पुण्यतिथि श्रृद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. बी. के. कौशिक महासचिव मानव सेवा संघ, करनाल, हरियाणा तथा अध्यक्ष डा. एम.एल. शर्मा, निदेशक गांधी अध्ययन केन्द्र पंजाब विश्वविद्यालय थे।

मुख्य वक्ता श्री बाल कृष्ण कौशिक ने बताया कि डा. साहब का जीवन ऐसा विशाल और बहुमुखी था कि उसका प्रभाव पंजाब प्रदेश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई देता है। आप सेवा मार्ग के ऐसे पथिक थे जो निरन्तर भिन्न–भिन्न मंजिलें तय करते रहें। वह महान देशभक्त, महानायक, राजनीतिज्ञ और श्रेष्ठ व्यक्ति थे।

डा. एम. एल शर्मा ने अपनी श्रृद्धान्जलि अर्पित करते हुऐ बताया कि आप गांधी जी के सच्चे अनुयायी थे। गांधी जी जब भी पंजाब आते थे तो डा. गोपीचन्द भार्गव के पास ही ठहरते थे। वो राजनीति में रहते हुऐ भी वे प्रतिदिन चर्खा कताई के लिये समय अवश्य निकालते थे। वो

एक विशेष व्यक्ति होते हुऐ भी साधारण व्यक्ति नजर आते थे क्योंकि वे अपने को एक साधारण कार्यकर्ता मानते थे।

श्री के. के. शारदा ने बताया कि किसी भी अखबार में डा. गोपीचन्द भार्गव जी के जीवन के बारे में नहीं लिखा है। आज सरकार भी उनकी तरफ से पूरी तरह उदासीन हो चुकी है।

श्री देवराज त्यागी ने मंच का संचालन करते हुऐ कहा कि डा. साहब संयम, सादगी अपनाने वाले तथा भोगों से दूर रहने वाले व्यक्ति थे। 1925 में गांधी जी ने डा. गोपीचंद भार्गव को चर्खा संघ का ऐजेन्ट नियुक्त किया था उसके बाद भार्गव जी अन्तिम समय तक चर्खे से जुड़े रहे।

श्री सुशील गुप्ता ने श्रृद्धान्जलि अर्पित करते हुऐ कहा कि डा. गोपीचंद भार्गव के सामने सदा गांधी जी का आदर्श रहा। मानव सेवा के साथ–साथ उनमें देशभक्ति की भावना भी अत्यंत प्रबल थी। जब गांधी जी की आंधी चली तो वे अपने को रोक नहीं सके उन्होंने डॉक्टरी छोड़कर रचनात्मक कार्यों में लग गयें। पंजाब में जितना खादी एवं ग्रामोद्योग का कार्य हुआ उनके पीछे भार्गव जी का विशेष हाथ है। इन कार्यों का संचालन करने वाली अनेक संस्थाओं के वह जन्मदाता थे। आखिरी समय में भी वे कार्य करते हुऐ कलम पकड़े जीवन से मुक्त हो गये। सदियों तक ऐसें व्यक्तियों को याद रखा जायेगा।

9 :– <u>महात्मा गांधी पुण्यतिथि</u> :– आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16, चंडीगढ़ में 30–01–2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि बड़े श्रृद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री के. के. शारदा, अध्यक्ष, सक्सेसर ऑफ फ्रीडम फाईटर एसोसिएशन ने की तथा मुख्य अतिथि के तौर पर श्री प्रदीप छाबड़ा भूतपूर्व मेयर, चंडीगढ़ उपस्थित रहें।

कार्यक्रम में एक घंटा सामूहिक चर्खा कताई की गई जिसमें खादी आश्रम, भारतीय खादी ग्रामोद्योग संघ, कार्यकर्ता ग्रामोद्योग संघ, कस्तूरबा सेवा मन्दिर ट्रस्ट, पंजाब खादी मंडल, आचार्यकुल चंडीगढ़ एवं निधि के कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों ने भाग लिया। चर्खा कताई के उपरान्त कार्यक्रम का शुभारम्भ गांधी जी के प्रिय भजन ''वैष्णव जन तो तेने कहिए'' से हुआ। जिसको मधुर स्वर में ब्लू बर्ड पब्लिक स्कूल, पंचकूला के छात्रों ने गाया।

देवराज त्यागी ने मंच संचालन करते हुऐ कहा कि गांधी जी किसी भी कार्य को छोटा या बड़ा नहीं मानता थे वे सभी कार्य को समान मानते थे। शुद्ध कमाई पसीने की कमाई है और सबको आजीविका का समान अधिकार है। उन्होंने आगे बताया कि गांधी जी का मानना था कि स्त्रियों की मुक्ति की शक्ति स्वयं उनमें ही है। पुरूष का कार्य स्त्री की रक्षा करते हुऐ ऐसे साधनों को उसके हाथ में देना है जिससे कि उसकी आत्मा का विकास हो। गांधी जी ने आजादी की लड़ाई के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन की भी लड़ाई लड़ी थी। उनका कहना था कि जब तक अन्याय पर आधारित सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में बदलाव नहीं होता तब तक हमारी राजनीतिक आजादी प्रभावहीन रहेगी।
कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रदीप छाबड़ा ने कहा कि हम यदि हम गांधी जी के कुछ कार्यों का अंश भी अपने जीवन में उतार लें तो यही उनके प्रति सबसे बड़ी श्रृद्धान्जलि होगी उन्होंने आगे बताया कि गांधी जी ने मृत्यु के बाद अपनी तमाम पुस्तकों और नोबल को दफना देने को कहा था क्योंकि वे चाहते थे कि उन्होंने जीवन में जो कुछ किया उसके लिए उनको याद किया जाये न कि जो कुछ उन्होंने कहा उसके लिए आचार्यकुल चंडीगढ़ के अध्यक्ष के. के. शारदा ने कहा कि कि बड़े से बड़े ऋषि मुनि सारी जिन्दगी भगवान की तपस्या करतें हैं मगर ऐसे बहुत कम होते हैं जिनके जुबान से मरते समय राम नाम निकले। गांधी जी इतने सच्चे थे कि उनके मुह से मरते समय भी राम का नाम निकला। वो राष्ट्रपिता नहीं हैं बल्कि वो तो सारी दुनिया के पिता है। उनके पुत्र हरिलाल ने कहा था कि आप राष्ट्रपिता तो बन गये मगर मेरे पिता तो जिन्दा नहीं रहें। उन्होंने कभी भी अपने व अपने परिवार के लिये कुछ नही किया और अपनी सारी जिन्दगी देश को समर्पित कर दी। उनका मानना था कि हमारा देश तब आजाद होगा जब देश का हर आदमी गर्व से यह कहेगा कि मैं हिन्दुस्तान का नागरिक हूँ।

10 :– <u>माता कस्तुरबा पुण्यतिथि</u> :– आचार्यकुल चंडीगढ़ के सौजन्य से दिनांक 22–02–2014 को राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि श्रृद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम का आरम्भ श्रीमती कंचन त्यागी के भजन से हुआ। इस अवसर पर सड़क सुरक्षा 2011–2020 दशक के लिये योजना विषय पर समारोह किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरमन सिंह सिद्धू, अध्यक्ष एराईव सेफ ने चंडीगढ़ की यातायात व्यवस्था पर बोलते हुऐ कहा कि भारत में 390 लोग एक्सीडेन्ट में रोज मारे जाते हैं। यातायात के सुधार के लिये नेशनल हाईवे से शराब के ठेकों को हटाना चाहिये। हमें रोड पर चलते हुऐ सारे नियम पालन करने चाहिये और नशा करके गाड़ी नहीं चलानी चाहिये।

श्री देवराज त्यागी एवं श्री के. के. शारदा ने अपनी श्रृद्धान्जलि देते हुऐ बताया कि माता कस्तूरबा गांधी सादगी से रहती थी। खादी पहनने का उन्होंने आजीवन व्रत ले रखा था। गांधी जी ने कहा था कि यदि मुझे कभी भी अपने जीवन साथी का चुनाव करना पड़े तो मैं कस्तूरबा को ही चुनुंगा। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि जन्म–जन्म तक कस्तूरबा ही मेरी पत्नी रहे। बापू का यह कथन बा की महिमा को बताता है।

बापू का सारा जीवन साधनामय था जिसमें बा का सदैव साथ रहा। बापू के ऐतिहासिक कार्य में बा का जो हिस्सा रहा उसका स्मरण भारत सदैव करता रहेगा। वे भारत की जनता की माता थी। माता की तरह ही सब भारतीयों की चिंता करती थी। सत्याग्रह आन्दोलन में हिस्सा लेना, जेल जाना, महिलाओं को जाग्रत करना, आश्रम में व्यवस्था करना आदि उनके सभी कामों के पीछे मातृत्व की ही प्रेरणा थी।

कार्यक्रम में प्रो. वी. सी. नन्दा, सुशील गुप्ता, मेजर सिंह, गुरपाल सिंह, कांशी राम, जे. डी. चीमा, रमेश बल, मुकेश शर्मा, कंचन त्यागी, रीना परवीन, पापिया चक्रवर्ती व खादी कार्यकताओं ने भाग लिया।

11 :– <u>शहीदी दिवस</u> :– गांधी स्मारक भवन में शहीद भगत सिंह सुखदेव व राजगुरु के शहीदी दिवस 23 मार्च 2014 को पर आचार्यकुल चंडीगढ़ तथा सक्सेसर आफ फ्रीडम फाईटर एसोसिऐशन की ओर से शहीदी दिवस समारोह मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधीश श्री सूर्याकान्त एवं विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्री सत्य गोपाल अध्यक्ष, चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड उपस्थित रहें। समारोह की अध्यक्षता श्री महेश दत्त शर्मा अध्यक्ष, गांधी स्मारक निधि पंजाब, हरियाणा व हि. प्र. ने की।

जस्टिस सूर्यकान्त ने शहीदों को श्रृद्धान्जलि देते हुऐ कहा कि स्तवंत्रता संग्राम में शहीदों ने अपनी कुर्बानी देकर हमें आजाद भारत दिया है जिसमें हम स्वतंत्र सांस ले रहे हैं।

महेश दत्त शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुऐ कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और सरदार भगत सिंह के लये स्वतंत्रता केवल मात्र साधन थी और साध्य नहीं थी जिसके द्वारा सारी मानवता को शोषण, अन्याय और गरीबी से मुक्ति के लिये तथा रूढ़िवादी व्यवस्था में बुनियादी और आमूल परिवर्तन के लिये संघर्ष किया। दोनों ही नेताओं ने सारे राष्ट्र को कन्याकुमारी से कश्मीर तक अपने संघर्ष द्वारा एक सूत्र में पिरोया तथा धर्म–जाति व साम्प्रदायिकता से उपर उठकर देशवासियों को एक जुट होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद से संघर्ष करने का आहवाहन किया जिसके कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद को न केवल हिन्दुस्तान से बल्कि सारी दुनिया से बिस्तर गोल करना पड़ा।

श्री के. के. शारदा अध्यक्ष आचार्यकुल चंडीगढ़ ने कहा कि जिन स्वतंत्रता सेनानियों/शहीदों ने देश के लिये कुर्बानियां दी उन्होंने ऐसे वर्तमान हिन्दुस्तान के लिये नहीं दी थी। आज देश के हालात बद से बदतर होते जा रहें हैं। हमें इनकों बदलना होगा।

सभी अतिथियों का धन्यवाद करते हुऐ श्री देवराज त्यागी ने बताया कि भगत सिंह ने कहा था कि मुझे अपना जीवन आदर्श के लिये कुर्बान करना है। भगत सिंह ने 23 वर्ष की तरूण अवस्था में फांसी का फंदा हंसते–हंसते चूमा। इंकलाब जिन्दाबाद का नारा देश की राजनीति में भगत सिंह ने दिया था जिसका अर्थ है बदल, अर्थात समाज व सरकार दोनों को बदलना ताकि सामान्य जनता के हितों की रक्षा हो सके।

इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी महाशय चंद्र कवि की जेल में लिखी पुस्तक 'जेलगीत' का लोकार्पण भी किया गया। देशभक्ति के गीत, नाटक आदि देखकर श्रोता देशभक्ति से ओतप्रोत हो गये।

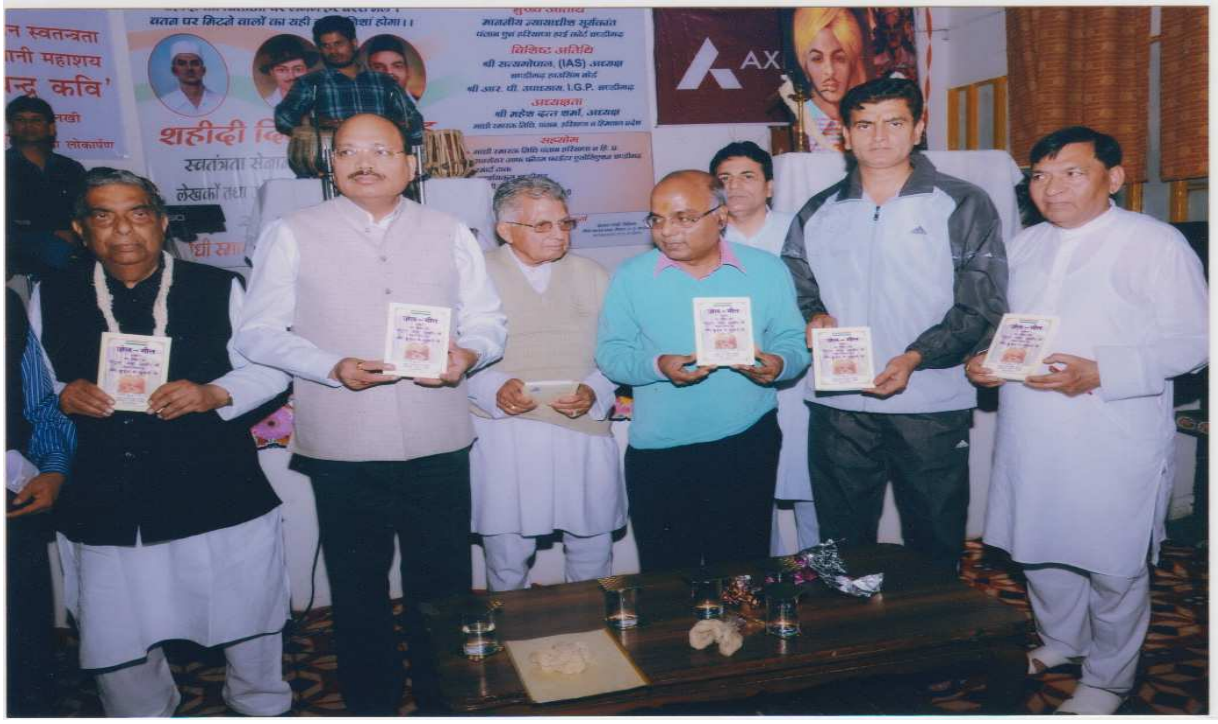

समारोह मे 35 स्वतंत्रता सेनानी एवं उनके परिवारों, 10 साहित्यकारों डा. चन्द्र त्रिखा, डा. माधव कौशिक, डा. राकेश सचदेवा, डा. उमा शर्मा, डा. शशि प्रभा, श्रीमती सादगी, डा. उर्मिल कौशिश सखी, डा. सुशील इसरत नरेलवी, श्री नवीन नीर एवं जिज्ञासा तथा एवं 13 विशिष्ट कार्य करने वालों शीश पाल, खादी ग्रामोद्योग आयोग, रामनाथ अध्यक्ष क्षेत्रीय पंजाब खादी मंडल, गुरपाल सिंह खादी सेवा संघ, जे.डी. चीमा, खादी फैडरेशन, डा. एम.पी. डोगरा प्राकृतिक चिकित्सक, संजीव कोहली, तारा कार्की (तलवारकजी), चरनजीत कौर–ट्रेनर, संजय गुप्ता (कम्प्यूटर मास्टर), जाखड़ खां बुनकर, रानी कात्तिन, पुनीता बावा समाज सेविका को सम्मानित किया गया। सम्मेलन में हरियाणा, पंजाब एवं चंडीगढ़ की संस्थाओं के सदस्यों ने भाग लिया।

देवराज त्यागी

सचिव